

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये षटपञ्चाशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে ষটপঞ্চাশৎ দশকম্ ॥

কালিযমর্দনে ভগবদনুগ্রহর্ষণনম্

রুচিরকম্পিতকুণ্ডলমণ্ডলঃ

সুচিরমীশ ননর্তিথ পন্নগে।

অমরতাডিতদুন্দুভিসুন্দরং

রিয়তি গায়তি দৈরতযৌরতে ॥ 56.1 ॥

নমতি যদ্যদমুষ্য শিরো হরে

পরিরিহায তদুন্নতমুন্নতম্।

পরিমথন্ পদপঙ্করুহা চিরং

র্যহরথাঃ করতালমনোহরম্ ॥ 56.2 ॥

ৎরদরভগ্নরিভুগ্নফণাগণে

গলিতশোণিতশোণিতপাথসি।

ফণিপতাররসীদতি সন্নতা -

স্তদবলাস্তর মাধর পাদযোঃ ॥ 56.3 ॥

অযি পুরৈর চিরায পরিশ্রুত -

ৎরদনুভাররিলীনহদো হি তাঃ।

মুনিভিরপ্যনরাপ্যপথৈঃ স্তরৈ -

নুন্নুরীশ ভরন্তমযন্ত্রিতম্ ॥ 56.4 ॥

ফণিরধুগণভক্তিরিলোকন -

প্ররিকসৎকরুণাকুলচেতসা।

फणिपतिर्भरताह्रुत जीरित -  
स्त्रुधि समर्पितमूर्तिररानम९ ॥ 56.5 ॥

रमणकं ब्रज वारिधिमध्यगं  
फणिरिपुर्न करोति रिरोधिताम्।  
इति भरद्वाचनान्यतिमानयन्  
फणिपतिर्निरगादुरगैः समम् ॥ 56.6 ॥

फणिरधुजनदत्तमणिव्रज -  
ज्वलितहारदुकूलरिडूषितः।  
तटगतैः प्रमदाश्रुमिश्रितैः  
समगथाः स्वजनैर्दिरसारधौ ॥ 56.7 ॥

निशि पुनस्तमसा ब्रजमन्दिरं  
ब्रजितुमक्कम एर जनोत्करे।  
स्वपति तत्र भरत्तरणाश्रये  
दरकृशानुररुक्क समस्ततः ॥ 56.8 ॥

प्रबुधितानथ पालय पालये -  
तुदयदार्तररान् पशुपालकान्।  
अरितुमाशु पपाथ महानलं  
किमिह चित्रमयं खलु ते मुखम् ॥ 56.9 ॥

शिथिनि र्णत एर हि पीतता  
परिलसत्यधुना क्रिययाहप्यसौ।  
इति नूतः पशुपैर्मुदितैरिभो  
हर हरे दुरितैः सह मे गदान् ॥ 56.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षटपञ्चाशं दशकं समाप्तम् ॥